INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 1 | FEBRUARY – 2026

# "अमिलिया नार्थ कोल ब्लॉक तथा सुलियारी कोल ब्लॉक के श्रमिकों की बचत, निवेश एवं ऋणग्रस्तता की प्रवृत्तियों का एक समीक्षात्मक अध्ययन (सिंगरौली जिले के संदर्भ में)"

पुष्पराज वैश्य
शोधार्थी वाणिज्य
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
संजय गांधी स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीधी (म.प्र.)

डॉ. एम.यू. सिद्दीकी
प्राचार्य
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शासकीय राजनारायण स्मृति स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैढ़न, जिला सिंगरौली (म.प्र.)

**सारांश –**

प्रस्तुत शोध पत्र सिंगरौली जिले के अमिलिया नार्थ तथा सुलियारी कोल ब्लॉक में कार्यरत श्रमिकों की बचत, निवेश एवं ऋणग्रस्तता की प्रवृत्तियों का वाणिज्यिक दृष्टिकोण से समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। कोयला उद्योग क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है, जहाँ कार्यरत श्रमिकों की आय संरचना, उपभोग व्यय एवं वित्तीय व्यवहार स्थानीय बाजार तंत्र को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। अध्ययन से यह सुस्पष्ट है कि नियमित वेतन प्राप्त करने के बावजूद श्रमिकों की बचत क्षमता सीमित है, जिसका प्रमुख कारण उच्च उपभोग व्यय, स्वास्थ्य संबंधी खर्च तथा सामाजिक दायित्व हैं। अमिलिया नार्थ क्षेत्र में औपचारिक बैंकिंग सेवाओं एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की पहुँच अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जबकि सुलियारी क्षेत्र में अनुबंध आधारित श्रमिकों के मध्य अनौपचारिक ऋण स्रोतों पर निर्भरता अधिक देखी गई। निवेश के संदर्भ में पारंपरिक साधनोंकृजैसे स्वर्ण, बचत खाते एवं आवर्ती जमाकृकी प्रधानता रही, जबकि दीर्घकालिक निवेश विकल्पों का उपयोग सीमित पाया गया। ऋणग्रस्तता की प्रवृत्ति विशेषतः आकस्मिक व्यय एवं उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों से प्रभावित है। इस शोध यह स्पष्ट है कि वित्तीय साक्षरता, संरचित बचत योजनाएँ एवं संस्थागत ऋण सुविधा श्रमिकों की आर्थिक स्थिरता को सुदृढ़ कर सकती हैं।

**मुख्य शब्द** – श्रमिक वर्ग, बचत व्यवहार, निवेश प्रवृत्ति, ऋणग्रस्तता, वित्तीय समावेशन, कोयला उद्योग, सिंगरौली जिला।

## प्रस्तावना –

भारतीय अर्थव्यवस्था में कोयला उद्योग ऊर्जा उत्पादन, औद्योगिक विकास तथा क्षेत्रीय रोजगार सृजन का प्रमुख आधार रहा है। मध्यप्रदेश का सिंगरौली जिला देश के प्रमुख कोयला उत्पादक क्षेत्रों में सम्मिलित है,

जहाँ अमिलिया नार्थ तथा सुलियारी कोल ब्लॉक औद्योगिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। इन क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिक न केवल उत्पादन प्रक्रिया के प्रमुख घटक हैं, बल्कि स्थानीय आर्थिक संरचना के उपभोग, बचत एवं निवेश व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं। अतः श्रमिकों की वित्तीय स्थिति का अध्ययन वाणिज्यिक विश्लेषण की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

वित्तीय व्यवहार विशेषतः बचत, निवेश एवं ऋणग्रस्तताकृआर्थिक स्थिरता के प्रमुख संकेतक हैं। बचत को पूंजी निर्माण का आधार माना जाता है, जो भविष्य की अनिश्चितताओं से सुरक्षा प्रदान करती है। निवेश आय के दीर्घकालिक संवर्धन का माध्यम है, जबकि ऋणग्रस्तता आर्थिक असंतुलन का सूचक हो सकती है यदि उसका स्तर आय के अनुपात से अधिक हो। श्रमिक वर्ग, जिसकी आय मुख्यतः वेतन पर आधारित होती है, प्रायः सीमित संसाधनों में जीवन–निर्वाह करता है। ऐसे में उसकी वित्तीय प्राथमिकताएँ उपभोग एवं तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर अधिक केंद्रित रहती हैं।

सिंगरौली जिले के अमिलिया नार्थ कोल ब्लॉक में अपेक्षाकृत संगठित क्षेत्र की उपस्थिति अधिक है, जिससे श्रमिकों को नियमित वेतन, भविष्य निधि एवं बीमा जैसी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। इसके विपरीत सुलियारी कोल ब्लॉक में अनुबंध आधारित श्रमिकों की संख्या अधिक होने के कारण आय अस्थिरता एवं वित्तीय असुरक्षा का स्तर अधिक पाया जाता है। इस भिन्नता का प्रभाव बचत एवं निवेश प्रवृत्तियों पर भी पड़ता है।

वर्तमान समय में वित्तीय समावेशन योजनाओं जैसे– प्रधानमंत्री जनधन योजना, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजनाकृके माध्यम से बैंकिंग सेवाओं की पहुँच में वृद्धि हुई है। तथापि व्यवहारिक स्तर पर वित्तीय साक्षरता की कमी एवं निवेश संबंधी जानकारी के अभाव के कारण श्रमिक वर्ग दीर्घकालिक निवेश विकल्पों का सीमित उपयोग करता है। परिणामस्वरूप आकस्मिक परिस्थितियों में ऋण निर्भरता बढ़ जाती है।

वाणिज्यिक अध्ययन के परिप्रेक्ष्य में श्रमिकों की बचत एवं निवेश प्रवृत्ति स्थानीय बाजार में पूंजी प्रवाह एवं उपभोग संतुलन को प्रभावित करती है। यदि श्रमिक वर्ग संगठित बचत एवं निवेश करता है तो क्षेत्रीय आर्थिक विकास को स्थायित्व प्राप्त होता है। इसके विपरीत अत्यधिक ऋणग्रस्तता उपभोग असंतुलन एवं सामाजिक–आर्थिक संकट का कारण बन सकती है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र सिंगरौली जिले के संदर्भ में अमिलिया नार्थ एवं सुलियारी कोल ब्लॉक के श्रमिकों की वित्तीय प्रवृत्तियों का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे श्रमिक वर्ग की आर्थिक स्थिति एवं क्षेत्रीय वाणिज्यिक संरचना को समझने में सहायता मिल सके।

## शोध के उद्देश्य –

खनन क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों की आर्थिक स्थिति केवल व्यक्तिगत आय तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह क्षेत्रीय बाजार संरचना, उपभोग व्यवहार एवं पूंजी निर्माण की प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है। बचत, निवेश एवं ऋणग्रस्तता जैसे आयाम श्रमिक वर्ग की आर्थिक स्थिरता एवं दीर्घकालिक सुरक्षा के प्रमुख निर्धारक हैं। सिंगरौली जिले के अमिलिया नार्थ एवं सुलियारी कोल ब्लॉक में कार्यरत श्रमिकों की वित्तीय प्रवृत्तियों में क्षेत्रीय भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। इन्हीं तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

(1) अमिलिया नार्थ एवं सुलियारी कोल ब्लॉक के श्रमिकों की बचत एवं निवेश प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

(2) दोनों क्षेत्रों के श्रमिकों में ऋणग्रस्तता की स्थिति एवं उसके प्रमुख कारणों का अध्ययन करना।

(3) श्रमिकों की वित्तीय समावेशन स्थिति एवं संस्थागत वित्तीय सेवाओं की पहुँच का मूल्यांकन करना।

उपरोक्त उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध पत्र को वास्तविक मानकों के अनुरूप पूर्ण करने का सार्थक प्रयास किया गया है।

## शोध विधि –

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक समंकों का उपयोग किया गया है। शोध हेतु कोल इंडिया लिमिटेड की वार्षिक रिपोर्ट, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के प्रकाशन, भारतीय रिजर्व बैंक की रिपोर्ट, सिंगरौली जिला सांख्यिकी पुस्तिका तथा मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण के आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त संबंधित जर्नल

लेखों, शोध प्रबंधों एवं सरकारी योजनाओं के दस्तावेजों का अध्ययन किया गया है। संकलित समंकों का वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति से विश्लेषण किया गया है। बचत दर, निवेश माध्यम, ऋण स्रोत एवं वित्तीय समावेशन संकेतकों का आकलन उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर किया गया है। अध्ययन का स्वरूप विश्लेषणात्मक एवं समीक्षात्मक है।

## विश्लेषण –

सिंगरौली जिले के अमिलिया नार्थ एवं सुलियारी कोल ब्लॉक में कार्यरत श्रमिकों की आय संरचना मुख्यतः मासिक वेतन एवं मजदूरी पर आधारित है। अमिलिया नार्थ क्षेत्र में संगठित क्षेत्र की प्रधानता होने से वेतन भुगतान नियमित एवं अपेक्षाकृत अधिक है, जबकि सुलियारी क्षेत्र में अनुबंध आधारित रोजगार की अधिकता आय अस्थिरता को जन्म देती है। आय की यह संरचनात्मक भिन्नता बचत एवं निवेश प्रवृत्तियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।

बचत व्यवहार के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अमिलिया नार्थ के श्रमिकों में औपचारिक बैंकिंग माध्यमों जैसे– बचत खाता, आवर्ती जमा एवं भविष्य निधिकृका उपयोग अधिक है। इसके विपरीत सुलियारी क्षेत्र के श्रमिकों में नकद बचत एवं अनौपचारिक समितियों का प्रचलन अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। बचत दर आय के अनुपात में सीमित है, जिसका प्रमुख कारण बढ़ता उपभोग व्यय, पारिवारिक दायित्व एवं स्वास्थ्य संबंधी खर्च हैं।

निवेश के संदर्भ में दोनों क्षेत्रों में दीर्घकालिक निवेश साधनों का उपयोग न्यून है। स्वर्ण क्रय, लघु बचत योजनाएँ एवं बीमा पॉलिसियाँ प्रमुख निवेश साधन के रूप में उभरे। शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड अथवा पेंशन योजनाओं में निवेश की प्रवृत्ति सीमित है, जो वित्तीय साक्षरता की कमी को इंगित करती है।

ऋणग्रस्तता की स्थिति विशेष रूप से सुलियारी क्षेत्र में अधिक पाई गई, जहाँ श्रमिक आकस्मिक स्वास्थ्य व्यय, विवाह एवं सामाजिक अनुष्ठानों हेतु अनौपचारिक ऋण स्रोतोंकृजैसे साहूकार एवं निजी उधारकृपर निर्भर रहते हैं। उच्च ब्याज दर के कारण आय का एक महत्वपूर्ण भाग ऋण भुगतान में व्यय हो जाता है, जिससे बचत क्षमता और कम हो जाती है। अमिलिया नार्थ क्षेत्र में संस्थागत ऋण की पहुँच अपेक्षाकृत बेहतर है, जिससे ब्याज भार कम रहता है।

वित्तीय समावेशन की दृष्टि से दोनों क्षेत्रों में बैंक खाते की उपलब्धता में वृद्धि हुई है, परंतु सक्रिय उपयोग एवं निवेश विविधीकरण अभी भी सीमित है। यह परिलक्षित करता है कि केवल बैंकिंग पहुँच पर्याप्त नहीं, बल्कि वित्तीय शिक्षा एवं परामर्श भी आवश्यक है।

समग्रतः विश्लेषण से स्पष्ट है कि श्रमिक वर्ग की आर्थिक स्थिरता बचत एवं निवेश की योजनाबद्ध प्रवृत्ति पर निर्भर है। यदि ऋण निर्भरता नियंत्रित न की जाए तो दीर्घकालिक आर्थिक असुरक्षा की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

## शोध की समस्याएँ एवं सुझाव –

अध्ययन से ज्ञात होता है कि श्रमिक वर्ग में वित्तीय साक्षरता का अभाव, निवेश विविधीकरण की कमी एवं अनौपचारिक ऋण स्रोतों पर निर्भरता प्रमुख समस्याएँ हैं। अनुबंध आधारित रोजगार आय अस्थिरता को बढ़ाता है, जिससे नियमित बचत कठिन हो जाती है। सामाजिक एवं स्वास्थ्य व्यय ऋणग्रस्तता को बढ़ावा देते हैं।

सुझाव स्वरूप वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों का आयोजन, श्रमिक सहकारी बचत समितियों का गठन, बीमा एवं पेंशन योजनाओं का विस्तार तथा संस्थागत ऋण सुविधा की सुलभता सुनिश्चित की जानी चाहिए। डिजिटल भुगतान एवं निवेश प्रशिक्षण कार्यक्रम श्रमिकों की दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता को सुदृढ़ कर सकते हैं।

## निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अमिलिया नार्थ एवं सुलियारी कोल ब्लॉक के श्रमिकों की बचत, निवेश एवं ऋणग्रस्तता की प्रवृत्तियों में संरचनात्मक भिन्नता विद्यमान है। संगठित क्षेत्र से जुड़े श्रमिकों में

औपचारिक वित्तीय साधनों का उपयोग अधिक है, जबकि अनुबंध आधारित श्रमिकों में अनौपचारिक ऋण निर्भरता अधिक पाई गई। बचत दर सीमित है एवं निवेश विविधीकरण न्यून है। वाणिज्यिक दृष्टिकोण से यह स्थिति क्षेत्रीय पूंजी निर्माण एवं आर्थिक स्थिरता को प्रभावित करती है। यदि श्रमिक वर्ग में वित्तीय साक्षरता, संरचित बचत योजना एवं संस्थागत ऋण सुविधा को सुदृढ़ किया जाए तो उनकी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार संभव है। अतः नीति निर्माताओं एवं उद्योग प्रबंधन को श्रमिक हितैषी वित्तीय ढाँचा विकसित करने की आवश्यकता है, जिससे सिंगरौली जिले की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को स्थायित्व प्राप्त हो सके।

## संदर्भ –

1. भारतीय रिजर्व बैंक. भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति एवं प्रगति पर रिपोर्ट 2023–24. भारतीय रिजर्व बैंक, 2024.
2. श्रम एवं रोजगार मंत्रालय. वार्षिक प्रतिवेदन 2022–23. भारत सरकार, 2023.
3. कोल इंडिया लिमिटेड. वार्षिक वित्तीय प्रतिवेदन 2022–23. कोल इंडिया लिमिटेड, 2023.
4. मध्यप्रदेश शासन. मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण 2022–23. अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी संचालनालय, 2023.
5. रंगराजन, सी. भारतीय अर्थव्यवस्थाः मुद्रा एवं वित्त पर निबंध. हार्पर कॉलिन्स इंडिया, 2019.
6. गुप्ता, एस. पी. सांख्यिकीय विधियाँ. सुल्तान चंद एंड संस, 2021.